श्री आनंद कल्याण

वि.सं. २०७४ - श्रावण शुक्ला- १५ • दि. २६, अगस्त, २०१८ • अंक-८

8

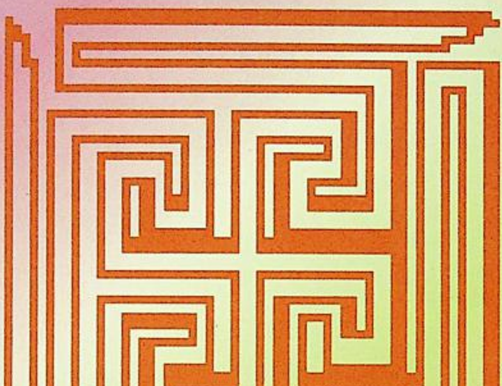

शेठ आणंदजी कल्याणजी

अहमदाबाद

श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति

श्री आदिनाथ दादा की ५००वीं सालगिरह

के उपलक्ष में

५००वीं सालगिरह का प्रसंग

संवत २०८७ वैशाख वद-६. सोमवार दिनांक १२-०५-२०३१

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी

द्वारा प्रस्तुत लाभ लेने का सुवर्ण अवसर.....

"सुवर्ण महोत्सव प्रसंग आयोजित सर्व साधारण फंड"

१५ साल बाद आनेवाले

सुवर्ण महोत्सव में हमारा लाभ क्यों न हो ?

बस ! आज से सिर्फ १ रुपया प्रति दिन द
१ साल के रु. ३६०, १५ साल के रु.५४००.

शेठ आणंदजी कल्याणजी के नाम का एकाउन्ट पेयी चैक / नकद भारत की एच.डी.एफ.सी. बैंक की किसी भी शाखा में सेविंग्स एकाउन्ट नं. 50100165224400 में जमा किया जा सकेगा। चैक जमा कराने के बाद पे-इन-स्लीप ट्रस्ट के अहमदाबाद के पते पर अपना नाम, पता, मोबाईल नंबर, ई-मेईल सहित फोर्म भरके भेज कर दान की रसीद अवश्य प्राप्त करे।

इस हेतु फोर्म शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट संचालित सभी तीर्थों में उपलब्ध है। इस के अलावा www.anandjikalyanjipedhi.org वेबसाईट पर से भी फोर्म डाउनलोड कर सकेंगे।

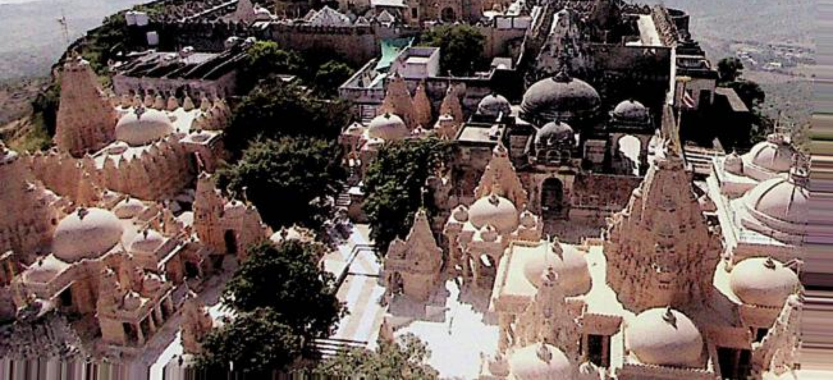

"श्री आनंद कल्याण" (त्रिमासिक पत्र)

(धार्मिक धर्मादा ट्रस्ट रजि नं. ए-१२९९/अहमदाबाद)

वर्ष : ३ कुल अंक : ८ कींमत : २० वार्षिक शुल्क : १००

गिरनार महिमा

परमोतमं नृलोके सिद्धानंतं शिवाद्री परमाणौ।

यस्मिन्नर्हदनंतं, स जयति गिरिनारगिरिराजः॥

मनुष्य लोक में परम उत्तम इस पर्वत पर हर परमाणु में अनंत आत्मांए सिद्ध हुई हैं। एवं अनंत अरिहंत भगवंत सिद्ध हुए है, वैसा गिरनार गिरिराज जयशील है। जय प्राप्त करता है।

यदतीतचतुर्विंशति नमीश्वराधा ईहाष्ट जिनपतयः।

कल्याणत्रिकामापुः स जयति गिरिनारगिरिराजः॥

गत चौबीसी में हुए श्री नमीश्वर, श्री अनिल, श्री यशोधर, श्री कृतार्थ, श्री जिनेश्वर, श्री शुद्धमति, श्री शिवशंकर अने श्री स्पंदन इस नामों के आठ श्री तीर्थंकर भगवंतो की दीक्षा, केवलज्ञान एवं निर्वाण यों तीन कल्याणक जहां पर हुए है, वह गिरिनार गिरिराज जयशील है। जय प्राप्त करता है।

दीक्षाज्ञानं निवत्ति माप, श्री नेमिनाथ इह भगवान्।

ब्रह्माद्वैतनिधिर्यः स जयति गिरनारगिरिराजः॥

गिरनार महातीर्थ पर वर्तमान चौबिसी के श्री नेमनाथ भगवान दीक्षा, केवलज्ञान, मोक्ष को प्राप्त हुए है। और जो मोक्ष की निधि स्वरुप है वो गिरिनार गिरिराज जयशील है।

: प्रकाशक :

शेठ आणंदजी कल्याणजी

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन,

२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद-३८० ००७.

श्री आनंद कल्याण (त्रैमासिक पत्र)

वर्ष : ३ | कुल अंक : ८

प्रकाशन

वि.सं. २०७४, श्रावण शुक्ला-१५ • दिनांक : २६-०८-२०१८, रविवार

प्रकाशक

हर्षद महेता (जनरल मेनेजर)

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन,

२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद-३८०००७

दूरभाप : 26644502 – 26645430

E-mail : shree_sangh@yahoo.com

मुद्रक : नवनीत प्रिन्टर्स (निकुंज शाह) मोबाईल : 9825261177

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी की वेबसाईट का नाम है :

www.anandjikalyanjipedhi.org

पेढी की मोबाईल एप **(Mobile App)** *भी है।*

एन्ड्रोईड (Android) *एवं एप्पल* (Apple) *दोनों प्लेटफोर्म पर से डाउनलोड कर सकेंगे।*

E-mail : info@anandjikalyanjipedhi.org

social presence **f in**

Download : Anandji Kalyanji Pedhi App

गिरनार महातीर्थ का परिचय

नेमिनाथ भगवान की टूंक :

इस जिनालय में मूलनायक के रूप में ६१ इंच की श्री नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा की प्रतिष्ठा नेमिनाथ भगवान के निर्वाण के २००० वर्ष पश्चात काश्मीर से संघ लेकर आये रत्नसार (रत्नाशा) नामक श्रावक द्वारा शासन और गिरनार तीर्थाधिष्ठायिका अंबिकादेवी की दिव्य सहायता से प.पू. आचार्य श्री आनंदसूरिजी महाराज साहब की पावन निश्रा में करीबन ८४,७९० वर्ष पूर्व हुई है।

प.पू. आचार्य धनेश्वरसूरिजी महाराज साहब विरचित "शत्रुंजय महात्म्य" नामक ग्रन्थ के आधारानुसार इन मूलनायक श्री नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा गत चौबीसी के सागर नामक तीसरे तीर्थंकर परमात्मा के समय में पांचवे देवलोक के ब्रह्मेन्द्र द्वारा तैयार की गई थी।

शत्रुंजय माहात्म्य में दर्शाये गये नेमिनाथ प्रभु के कथाननुसार यह प्रतिमा इसी स्थान पर पांचवें आरे के अंतिम चरण तक यहीं पूजी जायेगी। पश्चात् शासनदेवी अंबिका द्वारा पाताललोक में ले जाकर वहाँ पूजी जायेंगी।

इस जिनालय का निर्माण राजगच्छ के सदैव एकांतर उपवासतप के आराधक प.पू. आचार्य भद्रेश्वरसूरि महाराज साहब के उपदेश से वि.सं. ११८५ में पाटन नरेश श्री सिद्धराज जयसिंह के महामंत्री सज्जन द्वारा हुआ है। पूर्व में विमलराजा द्वारा निर्मित कराये गए काष्ठ के जिनालयों का नीव से जीर्णोद्धार करवाकर इस जिनालय का निर्माण हुआ था।

इस जिनालय का प्रांगण लगभग १९० फुट १३० फुट का है. जिसमे जिनालय को घेरती परिधि में ८४ देवलियाँ आई हुई है, जिन में प्रभुजी की प्रतिमाएं, चरण चिन्ह, गुरु भगवंतो की मूर्तियाँ, नेमिनाथ भगवान के नौ भवों का दर्शन करानेवाले अत्यंत नयनाभिराम चित्रपट, श्री नंदीश्वरद्वीप, सम्मेतशिखर आदि तीर्थ के चित्रपट तथा शासन अधिष्टायक देव-देवियों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित है। परिधि में एक भूतल (भूमिगृह) में मूलनायक के रूप में संप्रतिकालीन प्रगट प्रभावक अत्यंत नयनरम्य श्री अमीझरा पार्श्वनाथ भगवान की ६१ इंच की श्वेतवर्णीय प्रतिमा बिराजमान है।

इस जिनालय का मुख्य रंगमंडप लगभग ४४.६ फुट ४१.६ फुट का है।

जिसमें प्रभुजी की प्रतिमाएं बिराजित हैं। इस रंगमंडप के आगे लगभग ३८ फुट, ३१ फुट के दूसरे रंगमंडप में अगल बगल में प्रभुजी की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित की गई हैं।

जगमाल गोरधन का जिनालय :

इस जिनालय में मूलनायक आदिनाथ भगवान की ३१ इंच की प्रतिमा प्रतिष्ठित है । इसकी प्रतिष्ठा वि.संवत १८४८ के वैशाख मास को वदि तिथि ६ को शुक्रवार के दिन पोरवालज्ञाति के श्री जगमाल गोरधन द्वारा प.पू. आचार्य श्री विजय जिनेन्द्रसूरी म.सा के वरद हस्त से की गई है । इस श्रावक के नाम पर से जूनागढ़ शहर के उपरकोट समीपस्थ चोक का नाम जगमाल चोक रखा गया था।

मेरकवसी की टूंक : १. पंचमेरु का जिनालय :

इस पंचमेरु के जिनालय की संरचना अति सुंदर है । जिसके चारो और के चार कोनो में दो घातकीखंड में दो मेरुपर्वत और पुष्करार्धद्वीप में दो मेरु पर्वत तथा मध्य में जम्बूद्वीप में एक मेरुपर्वत इस प्रकार पांच मेरुपर्वत और पुष्करार्धद्वीप में दो मेरु पर्वत तथा मध्य में जम्बूद्वीप में एक मेरुपर्वत इस प्रकार पांच मेरुपर्वत स्थापित किये गए हैं। इन प्रत्येक मेरुपर्वत पर चतुर्मुखी प्रतिमाएं प्रतिष्ठित की गई हैं। इन प्रभु प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा प.पू. आचार्य श्री जिनेन्द्रसूरि म.सा. के वरद हस्त द्वारा वि.संवत १८५९ में की गयी है। मुख्य मेरूपर्वत पर मूलनायक के रूप में प्रभुजी ऋषभदेव भगवान की ९ इंच की प्रतिमा प्रतिष्ठित है।

२. अदबदजी का जिनालय :

इस जिनालय में प्रतिष्टित की गई भगवान ऋषभदेव की १५१ इंच ऊँची विशालकाय मूर्ति को देखते ही श्री शत्रुंजय गिरिराज की नवटूंकों में प्रतिष्ठित अदबदजी दादा का स्मरण ताजा होने से इस जिनालय को भी अदबदजी का जिनालय कहा जाता है।

इस प्रभुजी की प्रतिमा गिरनार के पहाड़ में ही उत्कीर्ण की गयी है। श्यामवर्णीय पाषाण से निर्मित होने पर भी वर्तमान में इस प्रभु प्रतिमा पर नयनरम्य लेप किया गया है।

वि. संवत १४६८ में २४ तीर्थंकर परमात्मा की प्रतिमाओं को प्रतिष्ठित

करने का उल्लेख दर्शानेवाला एक लेख जो कि पीले वर्ण के पाषाण में खुदा हुआ था, वह प्रभुजी की बैठक में लगा हुआ था।

३. मेरकवसी का मुख्य जिनालय :

इस जिनालय के मुख्यद्वार में प्रवेश करते ही छत में एक मुख व पांच शरीरवाले पंचांगवीर की कलाकृति तथा अन्य महीन-महीन नक्काशीयुक्त घुम्मट इत्यादि आबु-देलवाडा के विमलवसही तथा लूणवसही के शिल्पस्थापत्यों की स्मृति ताजा कराते हैं। इस बावन जिनालय के मुख्य नायक (मूलनायक) सहस्त्रफणाकृति युक्त प्रतिमा के रूप में भगवान पार्श्वनाथ हैं। वि. संवत १८५९ में वैशाख मास की सुदि ७, गुरुवार को इन प्रभुजी की प्रतिष्ठा प.पू. आचार्य श्री जिनेन्द्रसूरि म.सा. के वरद हस्त द्वारा अहमदाबाद के विशाश्रीमाली वलभुशाखा के शाह इन्दरजी के पुत्र शाह काशीदास द्वारा की गयी थी।

इस जिनालय की परिधि में बायीं ओर से घूमते हुए वि.संवत १४४२ में पीलेवर्ण के पाषाण में उत्कीर्ण चोवीस तीर्थंकर परमात्माओं की मूर्तियों वाला एक अष्टापद का प्रस्तरपट था। परिधि में आगे बढ़ते हुए मध्य भाग में जो बड़ी देवली आती है उसमें अष्टापद की प्रतिकृति की संरचना की गई है। वंहा से आगे बढ़ने पर मूलनायक के ठीक पीछे आनेवाली देवली में नीलवर्णीय श्री महावीरस्वामी बिराजमान है। वहां से उत्तरदिशा की और आगे बढ़ने पर प्रत्येक देवकुलिकाओं की आगे की चोकी की छत में अत्यंत मनोहर नक्काशियाँ मनको आह्लादित करती हैं। वहां से आगे बढ़ने पर उत्तरदिशा की और देवकुलिकाओं की कतार में मध्यभागस्थ बड़ी देवकुलिका में श्री संघ द्वारा वि.संवत १८५९ में श्री शांतिनाथ भगवान की चतुर्मुख प्रतिमाएं प.पू.आचार्य श्री जिनेन्द्रसूरि म.सा. के वरदहस्तों से प्रतिष्ठित है।

'यह टूंक सिद्धराज जयसिंह के महामंत्री साजनदे (सज्जन मंत्री) के द्वारा निर्मित करवाई गई है' वैसा कहा जाता है। जब सिद्धराज ने सज्जनमंत्री को सौराष्ट्र के दण्डनायक के रूप में नियुक्त किया तब उसने सौराष्ट्र की तीन वर्षो में दण्ड या कर के रूप में प्राप्त राशि को पाटण के राजकोष में जमा न करवाते हुए गिरनार के श्री नेमिनाथ भगवान के मुख्य जिनालय का जीर्णोद्धार करवाने में खर्च कर दी। इससे क्रोधित हुआ सिद्धराज सज्जनमंत्री को दण्ड देने के लिए सौराष्ट्र आने को तैयार हुआ. यह समाचार सज्जनमंत्री को ज्ञात होने पर उसने

वामनस्थली (वंथली) के महाजन के समक्ष सम्पूर्ण वृत्तांत प्रस्तुत किया तब थानादेवडी के भीमा साथरीया ने इस जीर्णोद्धार का सम्पूर्ण लाभ स्वयं को देने की बात की। पश्चात सिद्धराज ने सौराष्ट्र में आकर जब जीर्णोद्धारित हुए श्री नेमिनाथ भगवान के सुंदर जिनालय को देखा तब इस जीर्णोद्धार का सम्पूर्ण खर्च राजकोष से वहन करने का आदेश दिया।

किन्तु इधर भीमा साथरीया ने जीर्णोद्धार के लिए संचित राशि सज्जनमंत्री को सौंप दी थी, इसलिये सज्जनमंत्री द्वारा इस मेरकवसी जिनालय के निर्माण में इस राशि का उपयोग किया तथा भीमा साथरीया के नाम पर एक कुंड का निर्माण करवाया जो आजभी भीमकुण्ड के नाम से प्रसिद्ध हैं। भीमा साथरीया ने नेमिनाथ भगवान को १८ रत्नों से युक्त एक हार भी अर्पित किया था।

इस जिनालय में किये गये उत्कीर्णन के वजन के बराबर का सोना कुशल कारीगरों को अर्पण कर के अति सुंदर कलाकृतियुक्त यह मनोहर जिनालय निर्मित किया गया है।

४. सगराम (संग्राम) सोनी की टूंक :

इस जिनालय में मूलनायक के रूप में श्री सहस्त्रफणापार्श्वनाथ भगवान की २९ इंच की प्रतिमा बिराजित है। जिसकी प्रतिष्ठा वि.संवत १८५९ ज्येष्ठ सुदि ७ गुरुवार को प.पू. आचार्य जिनेन्द्रसूरि म.सा. के वरदहस्त से मांगरोळ निवासी वोरा पुरषोतम गोडीदास द्वारा करवायी गई है।

इस बावन जिनालयके मुख्य जिनालय में अत्यंत सुंदर ऐसा दुमंजिला रंगमंडप है, जिसमें पूजा-स्नात्र आदि अनुष्ठान के समय, उपर की मंजिल पर स्त्रियों के बैठने हेतु सुंदर व्यवस्था है। इस रंगमंडप से मूलनायक के गर्भगृह में प्रवेश करने पर गर्भगृह की ऊंचाई सामान्य जिनालयों से कुछ विशेष अधिक है। गिरनार के जिनालयों में इस जिनालय का शिखर सबसे ऊँचा लगता है।

श्री हेमहंस गणि रचित "गिरनार चैत्र प्रवाडी" कृति में इस टूंक उद्धारक के रूप में ओशवाल सोनी समरसिंह और मालदे का उल्लेख किया है। इस जिनालय का उद्धार वि.संवत १४९४ में कराये जाने का उल्लेख समरसिंह मालदे के नाम में अपभ्रंश होने पर संग्राम सोनी नाम प्रसिद्ध हुआ ऐसा प्रतीत होता है।

यह संग्राम सोनी गुजरात के दढियार प्रांत के लोलाडा गाँव से सपरिवार मांडवगढ जाकर बस गये थे और उन्होंने व्यापार में संपत्ति तथा कीर्ति प्राप्त की थी। वि.संवत १४५१ में प.पू. आचार्य श्री सोमसुंदरसूरि म.सा के उपदेश से स्वर्णाक्षरमयी व रौप्याक्षरी वाली अनेक प्रतें लिखवायी थी। अनेक जिनालयों का जीर्णोद्धार और नवनिर्माण करवाया था।

५. कुमारपाल की टूंक :

कलिकासर्वज्ञ प.पू. आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरि म.सा के उपदेश से परमार्हत कुमारपाल महाराज ने १४४४ भव्य जिनालय बनवाये थे। सं ११४३ से ११७४ के उनके शासनकाल में गिरनार तीर्थ पर भी उन्होंने यह टूंक बनवाई थी।

इस जिनालय में वर्तमान में २३ इंच की श्री अभिनंदनस्वामी की प्रतिमा बिराजित है, जिसकी प्रतिष्ठा वि.संवत १८७५ वैशाख सुदि ७ शनिवार को प.पू. आचार्य श्री जिनेन्द्रसूरि म.सा के वरदहस्त द्वारा मांगरोळ निवासी शाह नानजी जेकरण द्वारा करवायी गई थी।

इस जिनालय की उत्तरदिशा की और के प्रांगण में देडकीवाव नामक एक वापी, भीमकुण्ड, चन्द्रप्रभस्वामी की टूंक एवं गजप्दकुंड (हार्था पगला) जाने का दरवाजा हैं।

६. मानसंग भोजराज की टूंक :

इस जिनालय में २५ इंच की श्री संभवनाथ भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। वि. संवत १९०१ में कच्छ-मांडवी के वीशा ओशवाल शेठ मानसंग भोजराज द्वारा इस जिनालय का उद्धार किया गया होने के कारण यह जिनालय के आगे के चौक में स्थित सुरजकुण्ड का जीर्णोद्धार भी उन्होंने करवाया था तथा जूनागढ शहर के जगमाल चोक की बगल में आये हुए आदिनाथ जिनालय में भी प्रतिष्ठा करवायी थी।

७. गुमास्ता का जिनालय :

यह जिनालय वस्तुपाल - तेजपाल की माता कुमारदेवी का जिनालय कहा जाता है। जहाँ मूलनायक संभवनाथ भगवान की १९ इंच की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। कच्छ - मांडवी के गुलाबशाह द्वारा इस जिनालय का जीर्णोद्धार करवाया गया होने के कारण उनके नाम का अपभ्रंश होने की संभावना से वर्तमान में यह 'गुमास्ता का जिनालय' के रूप में पहचाना जाता है।

८. वस्तुपाल - तेजपाल की टूंक :

तेरहवीं शताब्दी में गुजरात के महामंत्रीश्वर वस्तुपाल - तेजपाल थे। इस. १२३२ से इ.स. १२४२ की समयावधि के दौरान गिरनार पर अनेक जिनालय बनवाये थे। ये जिनालय "वस्तुपाल विहार" के नाम से जाने जाते थे। उनमें से तीन संयुक्त जिनालय वाला यह एक जिनालय आज विद्यमान है।

इस जिनालय में अभी ४३ इंच की श्री शामला पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा बिराजमान है। वि.संवत १३०५ के वैशाख मास की सुदि ३ शनिवार को पाटन निवासी ठक्कुर वाहड (बाहड) पुत्र पद्मसिंह के पुत्र सामंतसिंह और महामंत्री सलखनसिंह जो उदायन मंत्री के पुत्र थे उन्होंने माता-पिता के आत्मश्रेयार्थ बृहत्गच्छ के प.पू. आचार्य प्रद्युम्नसूरि के शिष्य प.पू. आचार्य जयानंदसूरि महाराज सा. के वरदहस्त से प्रतिष्ठा करवायी थी।

संवत १२८८ के ६ बड़े शिलालेखों से जानने को मिलता है कि वस्तुपाल - तेजपाल ने इस जिनालय में वि.संवत १२८८ में फाल्गुन सुदि १० को नागेन्द्रगच्छीय प.पू. आचार्य सेनसूरि म.सा के वरद हस्त से प्रतिष्ठा करवायी थी।

इस जिनालय की बायीं और के जिनालय के चौकोर समवसरण में तीन गढ़ पर चतुर्मुखी प्रतिमाजी बिराजमान है जिसमें से पार्श्वनाथ भगवान की तीन प्रतिमाएं वि.संवत १५५६ के वर्ष में तथा चौथी चन्द्रप्रभ स्वामी की वि.संवत १४८५ के वर्ष में प्रतिष्ठित करने का उल्लेख है। दायीं और के गोलाकार समवसरण में स्थित तीन गढ़ पर भी चतुर्मुखी प्रतिमाएं बिराजमान है, जिनमे से दो सुपार्श्वनाथ भगवान की और एक नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा वि.सं. १५४६ में प्रतिष्ठित किये जाने का उल्लेख है। चौथी प्रतिमा चन्द्रप्रभस्वामी की है।

इस जिनालय का मुख्य रंगमंडप लगभग ५३ फुट ˙ २९ फूट का है। आजुबाजु के जिनालयों का रंगमंडप ३८ फुट ˙ ३८ फुट का है। इस जिनालय की उत्कीर्णता, सप्रमाणता, अनेक स्तम्भ, कलाकृतियुक्त पूतलियाँ, घुम्मट की अत्यंत महीन नक्काशी आदि आर्यशैली के उत्तम शिल्प स्थापत्य के प्रतीकों को देखकर मानो साक्षात् कला की देवी ने ही भूमि पर अवतार न लिया हो, वैसा अनुभव होता है।

संप्रति महाराज की टूंक :

मौर्यवंश में नौवें नंद की सत्ता के समय चन्द्रगुप्त राजा हुआ ! उसके पश्चात बिंदुसार राजा हुआ, उसके सिंहासन पर सम्राट अशोक आसीन था, उसका पुत्र कुणाल उज्जैन नगरी में रहता था। इस कुणाल का पुत्र अर्थात् मगधसम्राट प्रियदर्शी श्री संप्रति महाराजा। जो वि.सं. २२६ के आसपास उज्जैन में राज्य करते थें।

इन संप्रति महाराज ने प.पू. आचार्य आर्यसुहस्तिसूरि के उपदेश से जैन धर्म स्वीकार किया व भारतवर्ष में जैन धर्म का प्रचार किया था। संप्रति महाराजने अपने जीवनकाल के दौरान सवा लाख नूतन जिनालय बनवाये थे। और सवा करोड़ प्रतिमाएं निर्मित करवायी थी उन सब में गिरनार पर बनवाया गया यह जिनालय सबसे प्राचीन और सुंदर माना जाता है।

इस जिनालय मे वर्तमान में ५७ इंच की श्यामवर्णीय श्री नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा वि.सं १५१९ में प्रतिष्ठित की गई विद्यमान है।

इस जिनालय के मुख्य परिकोट के बाहर गवाक्ष में सरस्वती देवी तथा रंगमंडप में पद्मासनस्थ और कार्योत्सर्ग की भावभंगिमा में भी प्रभुजी की प्रतिमाएं बिराजमान है।

१०. ज्ञानवाव का जिनालय :

इस जिनालय के परिसर में ज्ञानवाव (वापिका-वापी) स्थित होने से यह जिनालय ज्ञानवाव के नाम से प्रसिद्ध है।

इस जिनालय में चतुर्मुखी प्रतिमाजी बिराजमान है, जिसमें मूलनायक के रूप में १५ इंच की श्री संभवनाथ भगवान की प्रतिमा है। वि.सं. १८७५ में रचित "श्री गिरनार तीर्थमाला" में प.पू. न्यायसागरजी म.सा. भी लिखते हैं कि

"पाछळ ज्ञान रे वाव छे, जल अतिसुखकारो
पद्मद्रह नी उपमा, पदपंक्ति संभारो।"

११. धरमशी हेमचंद की टूंक

इस जिनालय में मूलनायक के रूप में २९ इंच की श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इस जिनालय का जीर्णोद्धार वि.संवत १९३२ में मागरोळ निवासी शेठ श्री धरमशी हेमचंद द्वारा होने के कारण यह जिनालय "धरमशी टूंक" के नाम से प्रसिद्ध है।

१२. मल्लवाला जिनालय :

इस जिनालय में मूलनायक के रूपमें २१ इंच की श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमाजी बिराजमान है। इस जिनालय का उद्धार जोरावरमल्लजी द्वारा होने से यह 'मल्लवाला जिनालय' के रूप में जाना जाता है। इस जिनालय के परिसर की पश्चिम दिशा की दीवार में दो मल्ल युद्ध करते हों वैसी मूर्ति स्थापित की हुई है।

१३. चौमुखजी का जिनालय :

इस चौमुखी जिनालय में उत्तराभिमुख मूलनायक के रूप में २५ इंच की श्री नमिनाथ भगवान की प्रतिमा, पूर्वाभिमुख श्री सुपार्श्वनाथ भगवान, दक्षिणाभिमुख श्री चन्द्रप्रभस्वामी और पश्चिमाभिमुख श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिराजमान है। जिसकी प्रतिष्ठा वि.सं. १५११ में प.पू. आचार्य सोमसुंदरसूरि के शिष्य प.पू. आचार्य जयचंद्रसूरि के शिष्य प.पू. आचार्य जिनहर्षसूरि महाराज के वरदहस्त से हुई थी।

यह जिनालय पूर्व में श्री शामला पार्श्वनाथ भगवान के जिनालय के नाम से पहचाने जाने के कारण पूर्व में वहां मूलनायक श्री शामला पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा होने की संभावना प्रतीत होती है। इस जिनालय में प्रभुजी की गादी की चारों दिशा के चारों कोनो में चार चौकोर स्तंभिका में प्रत्येक में २४-२४ प्रतिमाएं इस प्रकार कुल १६ प्रतिमाएं उत्कीर्ण की गई है। ये चार स्तंभिकाएं विवाहमंडप की (चंवरी) चोरी जैसी दिखाई देने के कारण इस जिनालय को 'चोरीवाला जिनालय' भी कहा जाता है।

१४. रहनेमि का जिनालय :

इस जिनालय में मूलनायक के रूप में सिद्धात्मा श्री रहनेमिजी की श्यामवर्णीय ५१ इंच की प्रतिमा बिराजमान है।

वि.संवत २०५८ में इन प्रभुजी की प्रतिमा पर नवीन लेप किया गया है। रहनेमिजी भगवंत, नेमिनाथ भगवान के छोटे भाई थे, जिन्होंने दीक्षा लेकर इस गिरनारजी की पवित्र भूमि पर संयम आराधना कर अष्टकर्मों का क्षय कर सहसावन में केवलज्ञान और मोक्षपद की प्राप्ति की थी।

भारतवर्ष में मात्र यही एक मात्र जिनालय ऐसा होगा कि जहां सिद्धात्मा रहनेमि भगवंत, अरिहंत न होने के पश्चात भी उनकी प्रतिमा यहाँ मूलनायक के रूप में स्थापित की गई है।

१५. चन्द्रप्रभस्वामी की टूंक :

इस जिनालय में मूलनायक के रूप में १५ इंच की श्री चंद्रप्रभस्वामी की प्रतिमाजी बिराजमान है। जिसकी प्रतिष्ठा वि.सं. १७०१ में हुई है। इस जिनालय की छत अनेक कलाकृतियाँ से सुशोभित है, जिसमें चारों ओर शिल्पकलाकृति युक्त पूतलियां स्थापित कर के रंग भरा गया है।

सहसावन (सहस्त्रामवन) : (श्री नेमिप्रभु की दीक्षा-केवलज्ञान भूमि)

सहसावन में बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ परमात्मा की दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक हुए है। सहसावन को सहस्त्राम्रवन कहा जाता है क्योंकि यहां सहस्त्र अर्थात् हजारों आम के घटादार वृक्ष हैं। चारो तरफ आम से घिरे इस स्थान की समणीयता तन-मन को अनोखी शीतलता का अनुभव कराती है। आज भी मोर के मधुर केकारव और कोयल के टहूकार से गूंजती यह भूमि भी नेमिप्रभु के दीक्षा अवसर के वैराग्यरस की सुवास के महकती और कैवल्यलक्ष्मी की प्राप्ति के बाद समवसरण में बैठकर देशना देते हुए प्रभु की पैंतीस अतिशययुक्त वाणी के शब्दों से सदा गुंजती रहती हैं।

इस सहसावन में श्री नेमिनाथ प्रभु की दीक्षा कल्याणक तथा केवलज्ञान कल्याणक की भूमि के स्थान पर प्राचीन देव कुलिकाओं में प्रभुजी की पादुकाएं पधरायी हुई हैं।

उसमें केवलज्ञान कल्याणक की देवकुलिका में तो श्री रहनेमिजी तथा साध्वी राजमतीजी यहां से मोक्ष मे गए थे इसलिए उनकी पादुकायें भी बिराजमान हैं।

गिरनार महातीर्थ तलेटी स्थित धर्मशालाएं

१. श्री नेमिजिन जैन धर्मशाला तलेटी (कमरों की संख्या :- ९६ + होल)

पता :- गिरनारजी पर्वत की सीढियों के पास

व्यवस्थापक :श्री अश्विनभाई महेता, श्री बटुकभाई मो.नं. :-९४२८१८७६९५

२. श्री कान्ताबा संकुल जैन धर्मशाला तलेटी

पता :- गिरनारजी सीढियों के पास

जिनालय मूलनायक :- श्री आदीश्वर भगवान

व्यवस्थापक : श्री प्रवीणभाई बारोट, मो.नं. :-७०१६४४०४०२

३. श्री कच्छीभवन (रुपायतन रोड) जैन धर्मशाला

पता :- रुपायतन रोड, भवनाथ

जिनालय मूलनायक :- श्री मुनिसुव्रतस्वामी

व्यवस्थापक : श्री मोहनभाई काराणी,मो.नं. :-९९७९७७८१३४

४. श्री गिरनार राजेन्द्र शांति सेवा ट्रस्ट धर्मशाला

पता :- भारती आश्रम के पास, भवनाथ

जिनालय मूलनायक :- श्री नेमिनाथ भगवान

व्यवस्थापक :श्री दिलीपभाई वोरा, मो.नं. :-९७७३८७५४००

५. श्री गिरनार दर्शन जैन धर्मशाला (कमरों की संख्या :- ६७)

पता :- परिक्रमा वाला रोड, भवनाथ

जिनालय मूलनायक :- श्री नेमिनाथ भगवान

व्यवस्थापक :श्री हिरेनभाई शाह, मो.नं. :-९४०९६८५९९९

गिरनार महातीर्थ-जुनागढ समीप के तीर्थस्थल एवं दूरी

श्री जामनगर तीर्थ :- (१२५ कि.मी.)
शेठ श्री रायसिंह वर्धमान जैन पेढी,
जामनगर - ३६१ ००१
फोन :- ०२८८-२६८७९२३

जुनागढ शहर
श्री देवचंद लक्ष्मीचंद ट्रस्ट
उपरकोट रोड, जगमाल चोक,
बाबु का वंडा, जैन धर्मशाला
मु.पो. जुनागढ
फोन :- ०२८५-२६५०१७९
तलेटी (पेढी)२६२००५९

श्री वंथली तीर्थ : श्री शितलनाथ
भगवान जैन श्वे. मंदिर : (२० कि.मी.)
श्री वंथली तपागच्छ जैन संघ
आझाद चोक, मु.पो. वंथली-३६२६१०
फोन :- ०२८७२-२२२२६४

श्री हालाराधाम आराधना भवन,
मु.पो. वडालियासिंहण,
ता. जामखंभालीया, जि. जामनगर
फोन :- ०२८३३-२५४०६३
(१७० कि.मी.)

श्री बलेज पार्श्वनाथ जैन तीर्थ
बलेज - ३६२ २३०
वाया - माधलपुर जि. पोरबंदर
(६७ कि.मी.)

श्री चोरवाड तीर्थ (७५ कि.मी.)
श्री जैन श्वे.मू.पू. संघ मायलाकोट
मु.पो. वेरावल, जि. जुनागढ
फोन :- ०२८७-२२१३८१

श्री देलवाडा तीर्थ (१८० कि.मी.)
श्री अजाहरा पार्श्वनाथ पंचतीर्थ पेढी
मु.पो. देलवाडा - ३६५५१०
वाया - उना, जि. जुनागढ

श्री अजाहरा तीर्थ (१७५ कि.मी.)
श्री अजाहरा पार्श्वनाथ पंचतीर्थ
जैन पेढी, मु. अजाहरा - ३६२५१०
वाया - देलवाडा, जि, जुनागढ

श्री दीव तीर्थ (१८८ कि.मी.)
श्री अजाहरा पार्श्वनाथ पंचतीर्थ जैन पेढी
मु.पो. दीव- ३६५५२०
वाया - उना, जि. जुनागढ

श्री ढंकगिरि (ओसम) जैन तीर्थ (२९ कि.मी.)
पाटणवाव - ३६० ४३०
वाया - धोराजी, जि. राजकोट

श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ जैन तीर्थ (१०२ कि.मी.)
सैनिक सोसायटी, घंटेश्वर रोड
राजकोट - ३६० ००६

१गिरनार महातीर्थ पर बिराजमान श्री नेमिनाथ परमात्मा की प्रतिमा का इतिहास

इस जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र की गत चौबीसी के सागर नामक तीसरे तीर्थंकर को कैवल्यज्ञान प्राप्त हुआ था। उत्तमज्ञान की प्राप्ति के प्रश्चात् विविध प्रदेशो में विचरण करते हुए वे अपने चरणकमल की रज द्वारा भरतखंड की धन्य धरा को पावन कर रहे थे। एक बार उजयनी नगरी के बाहर उद्यान में करोडो देवों द्वारा रचित समवसरण में परमात्मा की सुमधुर देशना का अमृतपान कर रहे नरवाहन राजा ने परमात्मा से प्रश्न किया कि "हे प्रभु ! मेरा मोक्ष कब होगा ? परमात्मा ने कहा: 'अगली चौबीसी के बाईसवें तीर्थंकर बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ भगवान के शासन में तेरा मोक्ष होगा।' अपने भाविवृत्तांत को जानकर वैराग्यवासित बने नरवाहन राजा भगवान के पास दीक्षा लेकर संयम धर्म की उत्कृष्ट आराधना करने लगे। कालक्रम से आयुष्य पूर्ण होते ही उनका जीव पांचवें देवलोक का दस सागरोपम के आयुष्यवाला इन्द्र बना।

अष्टमहाप्रातिहार्ययुक्त विम्वविभु विचरण करते - करते चंपापुरी के महाउद्यान में समवसरे। उस समय वैराग्यसभर वाणी द्वारा बारह पर्षदा को प्रतिबोध करते हुए परमेश्वर चौदहराज लोक में रहे हुए सिद्धजीव और सिद्धशिला के स्वरुप को सुरम्य वाणी द्वारा प्रकाशित कर रहे थे :

८५ लाख योजन के विस्तारवाली, औंधे छत्र के आकारवाली, श्वेतवर्ण की सिद्धशिला है। वह चौदहराजलोक के अग्रभाग पर बारह देवलोक, नवग्रैवेयक, सर्वार्थसिद्ध नामक अनुत्तरविमान से १२ योजन उपर स्थित है। सिद्धशिला मध्य भाग में आठ योजन मोटी है और दोनों तरफ वाली पतली होते होते मक्खी के पंख जितनी अतिशय पतली होती है। मोती, शंख; स्फटिकरत्न समान अतिनिर्मल, उज्जवल सिद्धशिला और अलोक के बीच एक योजन का अंतर होता है। इस अंतर में उपर की सतह पर उत्कृष्ट से ३३३ धनुष्य और ३२ अंगुल के उत्कृष्ट देहप्रमाण वाले सिद्ध के जीव आठ कर्मो से मुक्त होकर अलोक की सतह को स्पर्श करके रहे हुए है, उस भाग को मोक्ष कहते हैं। मोक्ष के मुक्ति, सिद्धि, परमपद, भवनिस्तार, अपुनर्भव, शिव, निःश्रेयस, निर्वाण, अमृत, महोदय, ब्रह्म, महानंद आदि अनेक नाम हैं। उस मुक्तिपुरी में अनंत सिद्ध जीव अनंत सुख में

वास करते हैं। वे अविकृत, अव्ययरुप, अनंत, अचल, शांत, शिव, असंख्य, अक्षय, अरुप और अव्यक्त हैं। उनका स्वरुप मात्र जिनेश्वर परमात्मा अथवा केवली भगवंत ही जानते हैं। सर्वार्थसिद्ध विमान में निर्मल अवधिज्ञानवाले महेन्द्रों को एक करवट बदलने में १६॥ सागरोपम और दूसरी करवट ब्रदलने में १६॥ सागरोपम का काल पसार होता है। इस तरह ३३ सागरोपम के आयुष्य को अगाध सुख में सोते सोते ही पूर्ण करते हैं। इससे भी अनंतगुणा सुख मोक्ष में है। योग से पवित्र ऐसे पुरुष कर्म का नाश होने से स्वयं ही जान सकते है, किंतु वचन द्वारा वर्णन न हो सके एसा मुक्तिसुख सिद्ध के जीव प्राप्त करते हैं।

इस देशना के समय पांचवें देवलोक में इन्द्र बना हुआ नरवाहन राजा का जीव वीतराग की वाणी का सुधापान करके, स्वर्ग के सुखों की निःस्पृहा करके, सर्वज्ञ भगवंत को नमन करके पूछता है, 'हे स्वामी! मेरे इस भवसागर का परिभ्रमण कभी रुकेगा या नहीं ? आपके द्वारा वर्णन किए हुए मुक्ति का आस्वाद करने का अवसर मुझे मिलेगा या नहीं ? उसकी शंका का निवारण करते हुए धर्मसार्थवाह प्रभु कहते हैं, 'हे ब्रह्मदेव! आनेवाली अवसर्पिणी में श्री अरिष्टनेमि नामक बाईसवें तीर्थंकर होनेवाले हैं, आप उनके वरदत्त नामक प्रथम गणधरपद को प्राप्त करके, भव्यजीवों को बोध कराके, सर्वकर्मों का क्षय करके, रैवतगिरि के आभूषण बनके परमपद को प्राप्त करेंगे। यह निःसंशय बात है।' प्रभु के इन अमृतवचनों को सुनकर आनंदविभोर हुए ब्रह्मेन्द्र सागर प्रभु को अत्यंत आदरपूर्वक अभिवंदन करके अपने देवलोक में जाता है।

"अहो ! मेरे अज्ञानरुपी अंधकार का छेदन करनेवाले, मेरे भवसंसार के तारणहार श्री नेमिनिरंजन की उत्कृष्ट रत्नों की मूर्ति बनाकर उनकी भक्ति के द्वारा मेरे कर्मों का क्षय करुं।" इस भाव के साथ बारह - बारह योजन तक जिनकी कांति फैले ऐसे अंजन स्वरुपी प्रभु की वज्रमय प्रतिमा बनाकर दस सागरोपम तक निशदिन प्रतिमा की तरह संगीत-नृत्य-नाटकादि द्वारा त्रिकाल उपासना करते हैं। इस तरह श्रीनेमिनाथ प्रभु की भक्ति में उत्तरोत्तर उत्तमभाव लाकर स्व आयुष्य की अल्पता को जानकर उस प्रतिमा के साथ सुवर्णमय, रत्नमय ऐसी अन्य प्रतिमाओं को भी रैवताचल पर्वत की गुफा में 'कंचनबलानक' नामक चैत्य का निर्माण करके स्थापना की। स्व आयुष्य पूर्ण करके, वहां से च्यवन करके अनेक बडे बडे भवों को प्राप्त करके वह नेमिनाथ प्रभु के समय में पुण्यसार नामक राजा बना।"

यह पुण्यसार राजा पूर्वभव में स्वयं द्वारा निर्मित देवाधिदेव की मूर्ति की दस दस सागरोपम काल तक की हुई भक्ति के प्रभाव से गणधरपद प्राप्त करके नेमिनाथ भगवान के वरदत्त नामक प्रथम गणधर बनेंगे और शिवरमणी के संग में शाश्वत सुख का उपभोग करेंगे।" समवसरण में देशना के दौरान श्री नेमिनाथ प्रभु के इन मधुरवचनों को सुनकर उस समय के ब्रह्मेन्द्र उठकर परमात्मा को नमस्कार करके कहते हैं कि "हे भगवंत! उस प्रतिमा को मैं आज भी पूजता हूं, और मेरे पूर्वज इन्द्रों ने भी भक्ति से उसकी उपासना की है। पांचवें देवलोक में उत्पन्न होनेवाले सभी ब्रह्मेन्द्र आपकी उस प्रतिमा की पूजा भक्ति करते थे। आज आपके बताने पर ही इस प्रतिमा की अशाश्वतता का पता चला है। हम तो इसे शाश्वत ही मानते थे। उस समय प्रभु कहते हैं कि "हे इन्द्र! तिर्च्छालोक की तरह देवलोक मे अशाश्वती प्रतिमा नही होती इसलिए आप उस प्रतिमा को यहां लाओ।" प्रभु की आज्ञा से इन्द्र शीघ्र उस मूर्ति को ले आए। कृष्ण महाराजा ने हर्ष से पूजा करने के लिए वह मूर्ति प्रभु से ली। सुर-असुर और नरेन्द्र श्री नेमिनाथ प्रभु को वन्दन करके उनके मुख से रैवतगिरि का माहात्म्य सुनने लगे।

प्रभु कहते हैं कि-यह रैवताचलगिरि पुंडरिक गिरिराज का सुवर्णमय पांचवां मुख्य शिखर है, जो मन्दार और कल्पवृक्ष आदि उत्तम वृक्षों से लिपटा हुआ है। यह महातीर्थ हंमेशा झरते हुए झरनों से भव्य जीवों के पापों का प्रक्षालन करता है। इसके स्पर्श मात्र से हिंसा के पाप दूर हो जाते हैं।

सभी तीर्थ की यात्रा के फल को देनेवाले इस गिरनार के दर्शन और स्पर्शन मात्र से सर्व पाप नाश होते हैं।

इस गिरनार तीर्थ पर आकर जो न्यायोपार्जित धन का सद्व्यय करते है, उन्हें जन्मोंजनम तक संपत्ति की प्राप्ति होती है।

जो यहां आकर भाव से जिनप्रतिमा की पूजा करते हैं, वे मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं, फिर मानवसुख की तो बात ही क्या करें ?

जो यहां सुसाधु को शुद्ध अन्न, वस्त्र और पात्र अर्पण करते है, वे मुक्ति रुपी स्त्री के हृदय को आनंदित करते हैं।

. इस रैवतगिरि पर स्थित वृक्ष और पक्षी भी धन्य और पुण्यशाली हैं, तो मनुष्यों की तो बात ही क्या करना ?

देवता, ऋषि, सिद्धपुरुष, गंधर्व और किन्नरादि हंमेशा इस तीर्थ की सेवा करने आते हैं।

गिरनार पर रहे हुए गजपद कुंड आदि अन्य कुंडों का अलग-अलग प्रभाव है, जिसमें मात्र ६ महीने स्नान करने से प्राणियों के कुष्ठादि रोग नाश होते हैं।

इस प्रकार बालब्रह्मचारी श्री नेमिनिरंजन के मुखकमल से गिरनार तीर्थ की महिमा सुनकर पुण्यशाली सुर-असुर और नरेश्वर आनंदित होते हैं। उस अवसर पर श्री कृष्ण वासुदेव प्रश्न करते हैं, 'हे परम करुणासागर ! यह प्रतिमा जो मेरे प्रासाद में स्थापित करनी है, वहा वहां कितने समय तक रहेगी ? इसके बाद इसकी कहां कहां पूजा होगी ?'

प्रभु कहते हैं, 'जब तक द्वारिकापुरी रहेगी तब तक यह प्रतिमा तुम्हारे प्रासाद में पूजी जाएगी। उसके बाद कांचनगिरि पर देवताओं के द्वारा इसकी पूजा होगी। मेरे निर्वाण के २००० वर्ष के बाद अंबिका देवी की आज्ञा से उत्तम भावनावाला रत्नसार नामक वणिक उस प्रतिमा को रैवतगिरि के प्रासाद में बिराजमान कर, पूजा करेगा। बाद में १,०३,२५० वर्ष तक यह प्रतिमा वहां रहकर फिर वहां से अदृश्य होगी। उस समय दुषम-दुषम काल का छठ्ठा आरा प्रारंभ होती ही अधिष्ठायिका अंबिकादेवी यह जिनबिंब को पाताललोक में पूजेगी। अन्य देवता भी उसकी पूजा करेंगे।

वर्तमान काल मे बिराजमान गिरनार मंडन श्री नेमिनाथ भगवान के अद्‌भुत इतिहास को जानकर सार यह निकलता है कि यह प्रतिमा अतीत चौबीसी के तीसरे सागर तीर्थंकर परमात्मा के काल में पांचवें ब्रह्मलोक देवलोक के ब्रह्मेन्द्र के द्वारा भरवायी गयी है। इस कारण से भरतक्षेत्र में वर्तमान मे सबसे प्राचीनतम प्रतिमा मानी जाती है।

पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतों की वैयावच्च
सेवाभक्ति के लिए पेढी के मुख्य कार्यालय में
वैयावच्च विभाग कार्यरत है। उपधि-उपकरणों से लेकर
आराधना में उपयोगी दर्शन-ज्ञान-चारित्र की सामग्री अर्पण कर के
पूज्य श्रमण-श्रमणी भगवंतों की भक्ति की जाती है।
वर्तमान श्री नेमिनाथ परमात्मा की प्रतिमा का

पुनः प्रकटीकरण और रत्नसार श्रावक

वर्तमान अवसर्पिणी के भरतक्षेत्र की भव्य भूमि पर बाइसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ परमात्मा के निर्वाण के २००० वर्ष व्यतीत हो चुके थे। उसी काल में सोरठ देश की धन्यधरा पर कांपिल्य नामक नगर में रत्नसार नामक धनिक श्रावक रहता था। अचानक १२ वर्ष तक दुष्काल का समय आया। पशु तो क्या मनुष्य भी पानी के अभाव से मरने लगे। उस समय आजीविका की तकलीफ होने से धनोपार्जन करने के लिए रत्नश्रावक देशान्तर में घूमते घूमते काश्मीर देश के नगर में जाकर रहने लगा। पूर्वभवों में बांधे हुए पुण्यानुबंधी पुण्य के उदय से प्राप्त लक्ष्मी को, कदम-कदम पर सन्मार्ग में व्यय करने की भावना रत्नश्रावक के मन में उत्पन्न होने लगी। संपत्ति का संग्रह न करते हुए, संपत्ति का सदुपयोग कर सद्गति की तरफ प्रयाण हेतु अरिहंत परमात्मा की विशिष्ट पूजा-भक्ति करने के लिए पैदल संघ यात्रा का प्रयाण किया।

ग्रामानुग्राम देव-गुरु और साधर्मिक भक्ति तथा नये नये जिनालयों का निर्माण करवाते हुए श्री आनंदसूरि गुरु की अपार भक्ति करते हुए संघ आगे बढ रहा था। पूर्वकृत अशुभ कर्मोदय से संघमार्ग में अंतरायभूत बननेवाले, व्यंतर, वैताल, राक्षस और यक्षों के द्वारा होनेवाले उपसर्गों और विघ्नों का नाश करने के लिए श्री नेमिनिरंजन के शासन की अधिष्ठायिका अंबिकादेवी का ध्यान कर, रत्नश्रावक ने संघयात्रा को आगे बढाया। स्व वतन कांपिल्यनगर में स्वामिवात्सल्य सहित भक्ति से वहां के संघ को निमंत्रित कर, श्री आनंदसूरिगुरु की निश्रा में श्री संघ आनंदभर तीर्थाधिराज श्री सिद्धगिरि के शीतल सानिध्य में आया। आनंदोल्लास पूर्वक शाश्वत तीर्थ की भक्ति करके श्री संघ रैवतगिरि महातीर्थ के रमणीय वातावरण में भूतकाल में हुए अनंत तीर्थंकरों की सिद्धभूमि की सुवास लेने लगा। वर्तमान चौबीशी के बाइसवें तीर्थंकर बालब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ प्रभु की केवलज्ञान भूमि पर श्री नेमिजिन की पावन प्रतिमा की पूजा करके रत्नश्रावक के साथ संघ मुख्य शिखर की तरफ आगे बढ रहा था। उस समय रास्ते में जाते हुए सभी ने छत्रशिला को नीचे से कंपायमान होते हुए देखा। रत्नश्रावक ने तुरंत ही अवधिज्ञानी गुरु आनंदसूरि को इस छत्रशिला के कंपन का कारण पूछा तो, अवधिज्ञान के सामर्थ्य से पूज्य गुरुभगवंत आदरपूर्वक कहते हैं : हे रत्नसार ! तेरे द्वारा इस रैवतगिरि तीर्थ का नाश होगा और तेरे ही द्वारा इस तीर्थ का उद्धार भी होगा।'

जिनेश्वर परमात्मा का शासन जिसके रोम-रोम में बसा था, ऐसा रत्नश्रावक इस महातीर्थ के नाश में निमित्त बनने के लिए कैसे तैयार हुआ ? ह्रदय के उछलते भावों के साथ नेमिप्रभु को वंदन के लिए आया हुआ रत्नश्रावक अत्यन्त खेद के साथ दूर रहकर ही वंदन कर वापस जा रहा था। गुरु आनंदसूरिजी कहते है, 'रतन ! इस तीर्थ का नाश तेरे द्वारा होगा, इसका अर्थ तेरा अनुसरण करनेवाले श्रावको के द्वारा होगा। तेरे द्वारा तो इस महान तीर्थ का अधिक उद्धार होगा । इसलिए खेद मत कर !' गुरु भगवंत के उत्साहपूर्ण वचन सुनकर रत्नश्रावक संघ के साथे रैवतगिरि के मुख्य शिखर पर प्रवेश करता है। हर्ष से सभर यात्रीगण गजेन्द्रपद कुंड (हाथी पगला) से शुद्ध जल निकालकर स्नान करने लगे। रत्नश्रावक ने भी इस दिव्य जल से स्नान करके उत्तम वस्त्रों को धारण कर, गजपदकुंड के जल को कुंभ में ग्रहण कर, जैन धर्म में दृढ ऐसे विमलराजा के द्वारा रैवतगिरि पर स्थापित लेपमयी श्री नेमिनाथ प्रभु के काष्ठमय प्रासाद में प्रवेश किया।

सभी यात्रीगण हर्षविभोर बनकर गजपदकुंड के शुद्ध जल से कुंभ भर-भर कर प्रक्षालन कर रहे थे। इस अवसर पर अनेक बार देवताओं और पूजारी के द्वारा निषेध करने पर भी उनकी बात की अवगणना कर, हर्ष के आवेश में ज्यादा पानी के द्वारा प्रक्षालन करने से धाराप्रवाह जल के प्रहार से लेप्यमयी प्रतिमा का लेप गलने लगा और थोडी ही देर में वह प्रतिमा गिली मिट्टी के पिंड स्वरुप बन रही थी। इस दृश्य को देखकर रत्नश्रावक अत्यन्त आघात के साथ शोकातुर बना और मूर्च्छित हुआ। इससे सकलसंघ शोक के सागर में डूब गया। चारों तरफ हाहाकार मच गया। संघपति रत्नश्रावक पर शीतल जल के उपचार किये गये। थोडी ही देर में संघपति रत्नश्रावक स्वस्थ बन गया। प्रभुजी की प्रतिमा गलने से टूटे हुए ह्रदयवाला रत्नश्रावक आकुल-व्याकुल होकर विलाप करने लगा कि 'इस महातीर्थ का नाश करनेवाला मैं महापापी ! मुझे धिक्कार हो ! अज्ञानी ऐसा मेरा अनुकरण करनेवाले यात्रिकों को भी धिक्कार हो ! अरे ! यह क्या हो गया ? मैं उछलते ह्रदय के भावों के साथ इस महातीर्थ के दर्शन करने आया और तीर्थ उद्धार के बदले तीर्थनाश में निमित्त बन गया। अब मैं कौन से दान-शील-तप-भाव धर्म के कार्य करुं ? जिसके प्रभाव से मेरा यह

पाप कर्म नाश हो जाए ! नहीं ! नहीं ! अब तो अनेक सुकृत करने पर भी मेरा यह दुष्कृत्य नाश नहीं होगा । ऐसा लगता है ! अब व्यर्थ चिंता करने से क्या फायदा ? अब तो नेमिनाथ परमात्मा की मुझे शरणभूत हैं ! ऐसे दृढ संकल्प के साथ रत्नश्रावक चार आहार का त्याग कर वहीं प्रभु के चरणों में आसन लगाकर बैठ गया।

समय बीतता गया। रत्नश्रावक के सत्व की परीक्षा प्रारंभ होने लगी। अनेक विघ्न आने पर भी रत्न अपने संकल्प में मजबूत रहा। रत्न के सत्व और निश्चलता के प्रभाव से प्रसन्न हुई शासन की अधिष्ठायिका अंबिका देवी एक महिने के अन्त में प्रगट हुई। उनके दर्शन होते ही तपधर्म का प्रभाव जानकर हर्षातुर बना रत्न अंबिकादेवी को नमस्कार करता है। अंबिका देवी कहती है, 'हु वत्स ! तू धन्य है, तू खेद क्यों करता है ? स्वयं तीर्थयात्रा करने के साथ अनेक भव्य जीवों को संघ के साथ इस महातीर्थ की यात्रा करवाकर तुमने अपने मनुष्य जन्म को सफल किया है। इस प्रतिमा का पुराना लेप नाश होने पर नया लेप होता ही रहता है। जिस तरह जीर्णवस्त्र निकालकर नये वस्त्र ग्रहण किए जाते हैं, उसी तरह तुम भी इस प्रतिमा का नया लेप करवाकर पुनः प्रतिष्ठा करवाओ !' अंबिकादेवी के वचन सुनकर विषादग्रस्त बना रतन कहता है, 'मां ! आप ऐसा मत कहिए ! पूर्वबिंब का नाश करके मैं भारी कर्मी बना हूं, और आपकी आज्ञा से मूर्ति का लेप करवाकर पुनः स्थापना करुं तो भविष्य में पुनः मेरी तरह अन्य कोई अज्ञानी इस बिंब का नाश करनेवाला बनेगा। इसलिए ओ मैया ! आप यदि मेरे तप से प्रसन्न हों, तो मुझे ऐसी कोई अभंग मूर्ति दीजिए जिससे भविष्य में किसी के द्वारा इसका नाश न हो सके और भक्तजन भाव से जलाभिषेक करके अपनी इच्छाओं को पूर्ण कर सके।'

अंबिकादेवी रत्नश्रावक के इन वचनों को सुना अनसुना कर अदृश्य हो गयी। अंबिका देवी को अदृश्य होते देखकर रत्नश्रावक पल-दो-पल अस्वस्थ बन गया। परन्तु अनुपर सत्व का स्वामी रत्न स्वस्थ बनकर पुनः अंबिकादेवी के ध्यान में बैठ गया। रत्न के महासत्व की कसौटी करने के लिए देवी ने अनेक उपसर्गों के द्वारा उसे ध्यान से चलायमान करने की बहुत कोशिश की, परन्तु वह मेरुसम निश्चल रहा। तब गर्जना करते हुए सिंहरुप वाहन के उपर बैठकर चारों

दिशाओं को प्रकाशित करती हुई अंबिकादेवी पुनः प्रत्यक्ष होकर कहती है, 'हे वत्स ! तेरे दृढ सत्व से मैं प्रसन्न हूं,तुम मुझसे वरदान मांगो।' देवी के इस वचनों को सुनकर रत्नश्रावक कहता हैं, 'हे मां ! इस महातीर्थ के उद्धार के सिवाय मेरा अन्य कोई मनोरथ नहीं है, आप मुझे श्रीनेमिनाथ प्रभु की ऐसी वज्रमय मूर्ति दीजिए जो शाश्वत रहे, और जिसकी पूजा से मेरा जन्म कृतार्थ बने एवं पूजा करनेवाले अन्य जीव भी हर्षोल्लास को प्राप्त करें !' अंबिका देवी कहती है, 'सर्वज्ञ भगवंत ने तेरे द्वारा तीर्थ का उद्धार होगा ऐसा कहा है इसलिए तुम मेरे साथ चलो ! मेरे पीछे – पीछे इधर – उधर देखे बिना चले आओ' । रत्नश्रावक देवी के पीछे – पीछे चलने लगा । बायीं तरफ के शून्य शिखरों को छोडती हुई देवी पूर्व दिशा की तरफ, हिमाद्रिपर्वत के कंचन शिखर पर गयी, जहां सुवर्ण नामक, गुफा के पास आकर देवी सिद्धविनायक नामक अधिष्ठायक देव को विनती करती है, 'भद्र ! इन्द्र महाराजा के आदेश से आप इस शिखर के रक्षक हो अतः यह द्वार खोलो ।' देवी के आदेश से सिद्धविनायक ने तुरंत ही गुफा के द्वार खोले, तब अंदर से दिव्यतेजपुंज प्रगट हुआ और आगे – आगे अंबिकादेवी और पीछे – पीछे रत्नश्रावक ने इस दिव्य गुफा में प्रवेश किया । सुवर्ण मंदिर में बिराजमान विविध मणि, रत्नादि की मूर्तियो को बताते हुए अंबिका देवी कहती है, 'हे रत्न ! यह मूर्ति सौधर्मेन्द्र ने बनायी है, यह मूर्ति धरणेन्द्र ने पद्मरागमणि से बनायी है, यह मूर्तियां भरत महाराजा, आदित्ययशा, बाहुबली आदि के द्वारा रत्न, माणेक आदि से बनवायी गयी है तथा दीर्घकाल तक उन्होंने इन बिंबों की पूजा–भक्ति की है। यह ब्रह्मेन्द्र के द्वारा रत्न मणि का सार ग्रहण करके बनवायी गई है जो शाश्वत मूर्ति के समान असंख्य काल तक उनके ब्रह्मलोक में पूजी गयी है। यह राम और कृष्ण के द्वारा बनायी गयी है। इन मूर्तियों में से जो पसंद हो वह ग्रहण करो ।'

मानव के मन को चुरानेवाली ऐसी मनोरम्य देवाधिदेव की दिव्य मूर्तिओं को देखकर रत्नश्रावक प्रसन्नता के परमोच्च शिखरों को पार करने लगा। आज उसके हर्ष का पार नहीं था। सभी प्रतिमाए बहुत सुंदर थी। कौन सी प्रतिमा पसंद करनी, इसका निर्णय करना अति कठिन कार्य बन गया था। अंत में उसने मणिरत्नादिमय जिनबिंब को पसंद किया तब अंबिका देवी ने कहा, 'हे

वत्स ! भविष्य में लोग लज्जारहित, निष्ठुर, लोभ से ग्रस्त एवं मर्यादा रहित होंगे। वे इस मणिरत्नमय जिनबिंब की आशातना करेंगे। तुझे इस तीर्थ का उद्धार करने के बाद बहुत पश्चात्ताप होगा। इसलिए मणिरत्नमय का आग्रह छोडकर ब्रह्मेन्द्र द्वारा रत्न-माणिक्य के सार से बनवायी गयी सुदृढ, बिजली आंधी, अग्नि, जल, लोहा, पाषाण अथवा वज्र से भी अभेद्य महाप्रभावक ऐसी प्रतिमा को ग्रहण करो !' इतना कहकर देवी ने १२ योजन दूर तक प्रकाशित होनेवाले इस मूर्ति को कच्चे सूत के तार से बांधकर आगे-पीछे या बाजु में देखे बिना शीघ्रातिशीघ्र ले जाओ ! यदि मार्ग में कहीं पर भी विराम करोगे तो यह मूर्ति उसी स्थान पर स्थिर हो जाएगी।' रत्नश्रावक को इस तरह सूचना देकर अंबिकादेवी स्वस्थान पर वापिस लौटी।

अंबिकादेवी की असीम कृपा के बल से प्राप्त प्रतिमा को लेकर रत्नश्रावक देवी के आदेशानुसार आगे-पीछे या बाजु में देखे बिना अस्खलित गति से कच्चे सूत के तार से बांधे गए इस बिंब को, मानों कपास न ले जा रहा हो, उस तरह इस जिनबिंब को जिनालय के मुख्य द्वार तक लाते है। उस समय वह सोचता है कि जिनालय में स्थित पूर्व की लेपमय प्रतिमा को हटाकर अंदर की भूमि की प्रमार्जना कर सफाई न करुं, तब तक इस नवीन जिनबिंब को यहीं रखू। प्रासाद के अंदर अफाई कर, बाहर आकर रत्नश्रावक ने जब नवीन बिंब को अंदर ले जाने का प्रयास किया,तब वह प्रतिमा उसी स्थान पर मेरुपर्वत की तरह करोडों मनुष्यों से भी चलायमान न हो सके, उस तरह अचल बन गयी। इस अवसर पर रत्नश्रावक चिंतातुर होकर आहारपानी का त्याग कर, पुनःअंबिकादेवी की आराधना में मग्न बन जाता है। निरंतर सात दिन के उपवास के अंत में अंबिकादेवी पुनः प्रगट होकर कहती है, 'हे वत्स ! मैंने तो तुम्हे पहले ही कहा था कि मार्ग में कही पर भी विराम किए बिना इस बिंब को ले जाकर पधराना ! व्यर्थ प्रयास करने का कोई अर्थ नहीं। किसी भी हालत में यह प्रतिमा नहीं हटेगी। इस प्रतिमा को यथावत रखकर पश्चिमाभिमुख द्वारवाला प्रासाद बनवाओ ! अन्य तीर्थो में तो उद्धार करनेवाले दूसरे कई मिलेंगे, परन्तु वर्तमान में इस तीर्थ के उद्धारक तुम ही हो इसीलिए कार्य में विलंब मत करो।'

इस तरह सूचना कर अंबिकादेवी अंतर्धान हो गयी। रत्नश्रावक पश्चिमाभिमुख प्रासाद बनवाता है। सकल संघ के साथ हर्षोल्लास पूर्वक प्रतिष्ठा महोत्सव करवाता है, जिसमें आचार्यों के द्वारा सूरिमंत्र के पदों से आकर्षित बने हुए देवताओं ने उस बिंब और चैत्य को अधिष्ठायक युक्त बनाया। रत्नश्रावक अष्टकर्मनाशक अष्टप्रकारी पूजा कर, लोकोत्तर जिनशासन की गगनस्पर्शी गरिमा को दर्शानेवाली महाध्वजा को लहराकर, उदारतापूर्वक दानादि दे कर, भक्ति से नम्र बनकर, नेमिनाथ प्रभु के सन्मुख खडे रहकर स्तुति करता है।

'हे अनंत! जगन्नाथ! अव्यक्त! निरंजन! चिदानंदमय! और त्रैलोक्यतारक ऐसे स्वामी! आ जय को प्राप्त हों, हे प्रभु! जंगम और स्थावर देह में आप सदा शाश्वत हैं, अप्रच्युत और अनुत्पन्न हैं, और रोग से विवर्जित हैं। देवताओं से भी अचलित हैं, देव, दानव और मानव से पूजित हैं, अचिन्त्य महिमावंत हैं, उदार हैं, द्रव्य और भाव शत्रुओं के समूह को जीतनेवाले हैं, मस्तक पर तीन छत्र से शोभायमान, दोनों तरफ चामर से विंझे जाते, और अष्टप्रतिहार्य की शोभा से उदार ऐसे, हे विश्व के आधार! प्रभु! आपको नमस्कार हो!

भावविभोर बनकर स्तुति करने के बाद रत्नश्रावक पंचांग प्रणिपात सहित भूतल को स्पर्श कर अत्यन्त रोमांचित होकर साक्षात् श्री नेमिप्रभु को ही न देखता हो ? उस तरह उस मूर्ति को प्रणाम करता है। उस समय उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर अंबिकादेवी क्षेत्रपालादि देवताओं के साथ वहां आती है और रत्नश्रावक के गले में पारिजात के फूलों की माला पहनाती है। बाद में रत्नश्रावक कृतार्थ होकर स्वजन्म को सफल मानकर सौराष्ट्र की भूमि को जिनप्रसादों से विभूषित कर सात क्षेत्रों मे संपत्ति स्वरूप बीज को बोनेवाला, वह परंपरा से मोक्षसुख का स्वामी बनेगा।

चलो, सभी गिरनार चलें!

पिछ्ले छह महिनों में इस पावन तीर्थाधिराज गिरनार की यात्रा-स्पर्शना करने हेतु ५०००० से ज्यादा यात्री पधारे थे। ४० पू.आचार्य भगवंत, ३०० से ज्यादा पू. साधु-साध्वीजी महाराज, १० छ'री पालित संघ एवं १५० से ज्यादा संघों का वाहन के द्वारा यात्रार्थ आगमन हुआ था।

वर्तमान श्री नेमिनाथ जिनालय का इतिहास

गुर्जरदेश के पाटण नगर की समृद्धि उस काल में कुछ और ही थी। आचार्य हेमचंद्रसूरि महाराज के उपदेश से, पाटण से गिरनार और शत्रुंजय महातीर्थ का छ'री पालित पैदल यात्रा संघ निकला था। श्री संघ आचार्य भगवंत सहित वणथली (वंथली) नामक गांव के बाहर ठहरा था। संघ के नर-नारी स्नान आदि क्रिया कर, बहुमूल्य वस्त्र पहनकर, रत्नजडित आभूषण धारणकर, परमात्मा के जिनालय में, दर्शन - पूजा आदि परमात्मा की भक्ति में मग्न थे, संघपति के पास भी बहुत धन था। यह सब देखकर सोरठ के राजा रा'खेंगार की नीयत बिगडी। उसका इरादा पाटण के इस धनाढ्य यात्रा संघ को लूंटने का इरादा था। उनसे उसको बहुत धन और सोना-चांदी रत्नो के आभूषण मिलने की बडी आशा थी।

राजा के नादान मित्रों ने उसे प्रेरित किया, 'राजन्! आपके प्रचंड पुण्यप्रताप से आज गुर्जरदेश के पाटण नगर का धन और लक्ष्मी आपके यहां सामने से आई है। राजन्! इस संघ को लूट लो! जिससे आपका धनभंडार भर जायेगा!' मित्रों की इन बातों को सुनकर राजा का मन पिघल गया और संघ का सर्वस्व लूट लेने का मनोरथ उठा। परंतु राजमर्यादा का भंग और अपयश का डर उसे सता रहा था। धन को किस तरह लूटा जाये उसका विचार राजा करने लगा संघ को लूटने के दुष्ट इरादे से, संघ को एक दिन और रोकने का उपाय अजमाया। दूसरे दिन राजकुटुंब में किसी बडे की मृत्यु हो गई। उस दौरान आचार्य भगवंतने रा'खेंगार की दुष्ट नीयत को जान लिया, इसलिए उन्होंने इस मृत्यु के बहाने राजमहल में रा'खेंगार को उपदेश देते हुए नीति के मार्ग पर चलने की हितशिक्षा दी। श्री संघ वहां से रवाना होकर श्री शत्रुंजय महातीर्थ की यात्रा करके पुनः पाटणनगर आ पहुंचा।

पाटण नरेश राजा सिद्धराज को रा'खेंगार के इस दुष्ट विचार के समाचार मिलते ही उसने सोरठ देश पर चढाई करके सं. ११७० में रा'खेंगार को हराकर कैद कर लिया और हमेशा के लिए उसकी राक्षसीलीला का अंत हुआ। महाराजा सिद्धराज का मंत्री सज्जन एक बार खंभात जा रहा था। तभी बीच में सकरपुर नामक गांव में भावसार के यहां उतरा। भावसार के घर में कडाई में

सोनामोहरें भरी हुई थी फिर भी किसी कारणवश उसे वह कोयला ही समझता था। सज्जनमंत्री ने पूछा, 'भाई ! ये सोना-मोहरें उसमें क्यों रखी हैं ?' भावसार ने सज्जन मंत्री को पुण्यवान समझकर सब सोना-मोहरें उसे दे दी सज्जनमंत्री ने भी पराये धन को ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा की वजह से वह सोनामोहरें राजा सिद्धराज को अर्पण कर दी। राजा भी सज्जनमंत्री को नाम जैसे गुणवाला, शुद्ध नैतिक भावनावाला श्रावक मानकर बहुत खुश हुआ और राज्य में ऊँचा ओहदा देने का निर्णय किया। रा'खेंगार को हराकर, उसकी मृत्यु के बाद, महामंत्री बाहड के सूचन से सज्जनमंत्री को सौराष्ट्र के दंडनायक के रुप मे नियुक्त किया।

प्रतिभाशाली प्रज्ञावान, कार्यक्षेत्र में कुशल, दीर्घदृष्टि एसे सज्जन में कार्य करने की विशिष्ट शक्ति होने के कारण उसने अल्प अवधि में ही सोरठ की प्रजा का स्नेह प्राप्त कर लिया था। सोरठ देश के कार्यभार के लिए सज्जनमंत्री ने जूनागढ को मुख्यस्थान बनाया। सोरठ देश की शान बढाने के लिए उसने अथक प्रयत्न करके सफलता हासिल की। कुछ समय बाद गिरनार गिरिवर पर यात्रा का प्रसंग आया तब एकदम जीर्ण हुए जिनालयों की दुःसहय परिस्थिति को देखा। एक के बाद एक जिनालय खंडहर बनते जा रहे हैं, यह देखकर, सज्जन बहुत ही दुःखी हो गया। महाराजा सिद्धराज की हुकुमत में जिनेश्वर परमात्मा के जिनालयों की यह हालत ! उसका मन व्यथित हो उठा। उस समय राजगच्छ के एकांतर उपवास तप की आराधना करनेवाले आचार्य भद्रेश्वरसूरि के शुभ उपदेश से, सज्जन मंत्री ने जीर्ण-शीर्ण हालत में रहे, काष्ठ के बने हुए, श्री नेमिनाथ परमात्मा के मुख्य जिनालय का, नींव के साथ संपूर्ण जिर्णोद्धार करवाने का संकल्प किया।

शुभमुहूर्त पर गिरिवर के जिनालय का जीर्णोद्धार प्रारंभ हुआ। कुशल कारीगर अपनी कला का कमाल दिखाने लगे। खंडहर होनेवाले मंदिर, महल स्वरुप बनने लगे। गिरिराज के शिखर पर छैनी की गूंज सुनाई देने लगी। सज्जन अपनी सर्वशक्ति जिनालय के नवनिर्माण में लगा रहे थे। एक तरफ सोरठ देश का राजकार्य दूसरी तरफ जिनालय का जीर्णोद्धार ! इन दो महत्वपूर्ण कार्यों में सतत व्यस्त रहने वाले सज्जन को जीर्णोद्धार के लिए आवश्यक धन

की चिंता सताने लगी। वे चाहते तो सौराष्ट्र के गांव – गांव में घूमकर अपार धन – संपत्ति इकट्ठी कर सकते थे, परंतु राज्य की जवाबदारी की वजह से यह काम संभव नही था। इसलिए सोरठ देश की ३ वर्ष की जो आमदनी, राजभंडार में जमा करानी थी, वह उन्होंने जीर्णोद्धार के काम में लगा दी। कुल समय बाद सौराष्ट्र के गांव – गांव से वह रकम इकट्ठी करके राजभंडार में जमा कर देंगे, ऐसा सोच कर ७२ लाख द्रम्म जितनी रकम जीर्णोद्धार के कार्य में लगा दी।

विघ्न संतोषियो को ढूंढना नहीं पडता। गिरनार के इस सर्वोत्तम कार्य करते हुए सज्जनमंत्री के उत्कर्ष को सहन करनेवाले लोगों ने पाटण नरेश महाराजा सिद्धराज के कान भरे। सौराष्ट्र के सज्जनमंत्री ने तीन – तीन साल से सोरठदेश की आमदनी में से एक कोडी भी राजभंडार में जमा नहीं की है, जरुर दाल में कुछ काला है। ऐसी झूठी शंका पैदा करके सिद्धराजा को भडकाने का षड्यंत्र रचना शरु किया। महाराजा सिद्धराज भी द्वेष से जलते इस राजपुरुष की बातें सुनकर गरम हो गये। और स्वयं जूनागढ जाकर राजकार्य का हिसाब लेने के लिए आतुर हो उठे। राजा को सज्जन के प्रति अनहद अविश्वास जाग उठा। अब कैसे भी करके बाजी हाथ में रखना मुश्किल हो रहा था। महामंत्री बाहड परिस्थिति को जानकर इस समाचार को तुरंत ही जूनागढ सज्जनमंत्री तक पहुंचाना चाहते थे। एक पवनवेगी उंटनी पर सवार को भेज कर बाहड मंत्री ने महाराजा सिद्धराज का समाचार सज्जनमंत्री तक पहुंचाया। कुशाग्र बुद्धि सज्जनमंत्री परिस्थिति को भांप गये। 'सोरठ की आमदनी की रकम अब कैसे भरी जाये ?' उस विचार में सज्जन खो गये। विचार करते करते उनको प्रथम वंथली तीर्थ का ध्यान आया। वंथली तीर्थ के रिद्धि सिद्धिवाले, गिरनार तीर्थ के लिए तन–मन–धन न्योछावर करनेवाले श्रावकों का उत्साह उसकी स्मृतिपथ पर आने लगा।

जीर्णोद्धार तथा सोरठदेश की राज्यव्यवस्था के कार्य में व्यस्त ऐसे सज्जनमंत्री ने सिद्धराजा के आगमन से पूर्व जीर्णोद्धार कार्य में लगी सोरठ देश की आमदनी जिनती रकम ईकट्ठी करने के लिए वंथली की ओर प्रयाण किया। महाजनों को इकट्ठा करके गिरनार जिनालय के जीर्णोद्धार की रकम की बात पहले बताई, गांव के श्रेष्ठियों के बीच अपनी ओर से जितनी हो सके उतनी रकम लिखवाने के लिए होड लगने लगी। सभा की भारी भीड में घुसता हुआ

मैले-फटे पुराने कपडे पहना हुआ एक आदमी आगे आने की कोशिश कर रहा था। तब शोर शराबे के कारण एक श्रेष्ठि चिल्लाया 'अरे, तेरे लिए वहां क्या खाने का रखा है ? गिरिवर के लिए चंदा इकट्ठा कर रहे हैं। उसमें विघ्न डालने तू कहां जा रहा है ? दो पैसे देने की भी तेरी औकात है ? वह आदमी तो सबकी उपेक्षा करके मौन धारण कर आगे बढता सज्जनमंत्री के पास पहुंच गया। सज्जनमंत्री के पास में जाकर कान में कहा की, 'मंत्रीश्वर ! इस महाप्रभावक गिरनार के लिए मैं मेरा सब कुछ देने को तैयार हूं, तो फिर आप सोरठ देश की तीन साल की आमदनी जितनी रकम के लिए क्या कर रहे हो ? इस गरीब पर दया करके इसका लाभ मुझे लेने दो। सज्जनमंत्री तो दो मिनट के लिए स्तब्ध रह गये। ऐसे मैले-फटे पुराने वस्त्रवाला मनुष्य और संपूर्ण रकम देने को तैयार यह कौन है ? सोच में पडे हुए सज्जन उसे पुछते हैं कि, 'आपका नाम ?' नम्रता के साथ उत्तर मिलता है, 'भीम साथरिया, मंत्रीश्वर ! गांव के श्रेष्ठि तो महाभाग्यवान है, उनको तो दान-पुण्य का मौका पल-पल मिलता ही है। आज इस गरीब को दो पैसे का पुण्य कमाने का मौका दे दो, तो मेरा जीवन भी धन्य बन जायेगा।' ऐसे कहकर समस्त सभाजन के समक्ष अपनी भावना व्यक्त कर, सज्जमंत्री का चरण-स्पर्श कर, अपनी झोली फैलाता है।

सज्जनमंत्री भीड के बीच भीमा साथरिया की भावना का मान रखकर, समस्त महाजन की सहकार देने की भावना को स्वीकार करने की असमर्थता दिखाते हैं। भीमा साथरिया जीर्णोद्धार के लिए रकम देने का वचन लेकर मंत्रीश्वर वापिस जुनागढ आते हैं। वहां महाराजा सिद्धराज के नजदीक पहुंचने के समाचार मिलते हैं। सुबह में महाराजा का प्रवेश होता है उस समय जुनागढ के नगरजन ठाठमाठ से महाराजा का स्वागत करते हैं और उनको बधाई देने हैं। महाराजा सिद्धराज के महल में आते ही सज्जन सिर झुकाकर महाराजा को उनके स्वास्थ्य के बारे में पुछता है। तब सज्जनमंत्री के दुष्ट व्यवहार की झुठी बातों से भडके हुए महाराज के अंदर की ज्वाला बाहर आई। उन्होने कहा की, 'आपके जैसा विश्वासघाती और राजद्रोही इस राज्य में ऊँचे पद पर आसीन है, वहां स्वस्थता होगी कैसे ? सोरठ की तीन साल की लगान-महसूल की आमदनी कहां है ? महाराज की निरर्थक चिंता का जानकार सज्जन शांत मन से जवाब

देता है, 'महाराज ! राज के आमदनी की एक - एक पाई का हिसाब तैयार है। आप कृपालु, सफर की थकान उतारने के लिए थोडा आराम फरमाये !'

सज्जनमंत्री के दृढतापूर्वक, निर्भय भरे जवाब से महाराज सिद्धराज पल दो पल में ठंडे हो गये। अपने निरर्थक गुस्से के लिए उनको पश्चाताप होने लगा। पुरे दिन नगरवासियों के मुंह से सज्जनमंत्री की कार्यकुशलता और राजकार्य की खुले दिल से प्रशंसा सुनी, साथ में सज्जनमंत्री के द्वारा बनवाये गए जिनालय के सुंदर जीर्णोद्धार के बारे में भी सुना। महाराज ने मंत्री को बुलाकर सबेरे गिरनार गिरिवर पर आरोहण करने की अपनी भावना व्यक्त की।

मंगलमय प्रभात में महाराज और मंत्री गिरि आरोहण कर रहे थे, उस समय शिखर पर शोभित धवलचैत्य और आकाश को छुने के लिए उडती ध्वजा की शोभा को देखकर, महाराज पूछते है, 'कौन भाग्यवान माता-पिता है ? जिसके संतान ने ऐसे सुंदर, मनोहर जिनालयों की श्रृंखला का सर्जन किया ? तब मंत्री कहता है, 'स्वामी ! आप। आप के माता-पिता का ही यह सौभाग्य है जिससे आप जैसे महापुण्यशाली के प्रताप से यह अप्रतिम सर्जन हुआ है।

आश्चर्यचकित महाराज पलभर के लिए मंत्रमुग्ध बनकर इस बात का रहस्य मंत्री को पुछते हैं तब मंत्री कहता है, 'हे स्वामी ! आपके पुण्यप्रभाव से ही यह अप्रतिम सर्जन हुआ है और आपके पिता कर्णदेव, और माता मीनल देवी भाग्यवान है कि आप जैसे शूरवीर पुत्र गुर्जर नरेश ने अपने पिता की स्मृति में ऐसे दीप्तिमान जिनालयों का सर्जन किया है। सोरठ देश की धन्यधरा की तीन-तीन साल की आमदनी इस जिनालय के नवनिर्माण में खर्च हुई है जिसके प्रभाव से ये मंदिर मन को मोहित कर रहे हैं। आप कृपालु ही सोरठ देश के स्वामी हो इसलिए आपके पिता कर्णदेव और माता मीनलदेवी धन्य बने है। 'कर्णप्रासाद' नामक इस जिनालय से गिरनार की शोभा में वृद्धि हुई है, जो आपके पिताजी की स्मृति को अविस्मरणीय बनाने में समर्थ है। फिर भी आप स्वामी को, सोरठ की तीन साल की आमदनी राजभंडार में जमा करवानी हो, तो एक एक पाई के साथ रकम भंडार में जमा करने के लिए, नजदीक के वणथली गांव का श्रावक भीमा साथरिया, अकेला ही पूरी रकम भरने के लिए तैयार है और अगर जीर्णोद्धार का उत्कृष्ट लाभ लेकर आत्मभंडार में पुण्य जमा करवाना हो तो यह विकल्प भी आपके लिए खुला है।'

सज्जनमंत्री के इन शब्दों को सुनकर महाराज सिद्धराज सज्जनमंत्री पर बहुत खुश होते हैं और कहते है, 'ऐसे मनोरम्य, सुंदर जिनालयों का महामूल्यवान लाभ मिलता हो तो मुझे उत तीन साल की रकम की कोई चिंता नहीं। मंत्रीश्वर! आपने तो कमाल कर दिया। आपकी बुद्धि, कार्यपद्धति और वफादारी के लिए मेरे हृदय में बहुत गौरव हो रहा है। मंत्रीश्वर! आपके लिए मुझे जो शंका-कुशंका हुई उस के लिए मैं क्षमा मांगता हूं। आज मैं भी धन्य बन गया हूं।'

इस तरफ मंत्रीश्वर के समाचार की राह देख रहा भीमा साथरिया बेचैन है, कि अभी तक सज्जनमंत्री के कोई समाचार क्यो नही आये? क्या मेरे मुंह तक आया हुआ पुण्य का यह अमृत कलश युंही चला जायेगा? सतत चिंतामग्न बने हुए भीमा की धीरज कम होने लगी है और अधीर बना हुआ भीमा जुनागढ की तरफ प्रयाण करता है। मंत्रीजी को जीर्णोद्धार के लिए रकम के समाचार नहीं भेजने का कारण पूछता है, सज्जन ने हकीकत बताई तो भीमा को बहुत आघात लगा, हाथ में आई हुई पुण्य की घडी ऐसे ही निकल जाने से वह दो क्षण के लिए अवाचक बन गया। पुनः स्वस्थ होते ही उसने कहा की, 'मंत्रीश्वर! जीर्णोद्धार दान के लिए रखी हुई रकम अब मेरे कुछ काम की नहीं, इसलिए आप इस द्रव्य को स्वीकार करके उसका योग्य उपयोग करे।

वंथली गांव से भीमा साथरिया के धन की बैलगाडियां सज्जनमंत्री के आंगन में आकर खडी हुई। विचक्षण बुद्धि सज्जन ने इस रकम से 'मेरकवशी' नामक जिनालय का और भीमा साथरिया की अविस्मरणीय स्मृति के लिए शिखर के जिनालय के समीप 'भीमकुंड' नामक एक विशाल कुंड का निर्माण करवाया।

गिरनार महिमा

दीक्षाज्ञानध्यानव्याख्यानशिवावलोकनस्थाने।

प्रभुचैन्यपावितोऽसौ, गिरिनारगिरीश्वरो जयति॥

दीक्षा, ज्ञान, ध्यान, व्याख्या एवं मोक्ष के दर्शन स्थान की वजह से जो स्थान प्रभु के चैत्य से पावन बना है, वह गिरिनार गिरीश्वर जयशील है। जय प्राप्त करता है।

गिरिराज शत्रुंजय पर के मंदिरों के चल रहे जीर्णोद्धार कार्य

नरशी केशवजी टूक :- संप्रति महाराज जिनालय में प्रदक्षिणा पथ का कार्य, मार्बल, फ्लोरींग, पांच जिनालयो का रंग काम।

वेलबाई कोठा विस्तार :- नरशी नाथा ट्रस्ट के जिनालय का जीर्णोद्वार कार्य।

चौमुखजी की टूक :- मुख्य जिनालय का जीर्णोद्धार कार्य

छीपावसही की टूक :- इस टूक के ईद गिर्द के जिनालयों का जिर्णोद्धार कार्य, नेमिनाथ जिनालय एवं आदीश्वर भगवान की चरणपादुका की देवकुलिका का निर्माण कार्य।

साकरवसही टूक :- फ्लोरिंग वगैरह का कार्य संपन्न हुआ है।

उजमफई की टूक :- साकरवसही एवं इस टूक के बीच की दीवाल का कार्य।

हेमाभाई की टूक :- कार्य संपन्न हुआ है।

मोदी की टूक :- बिजली के गिरने से मुख्य शिखर को नुकसान होने से शिखर का नवीनीकरण होगा।

बालाभाई की टूक :- रंगकाम चालु है।

केशवजी नायक टूक :- जिनालय की छत पर पीसीसी कार्य एवं फ्लोरिंग का कार्य होगा।

नेमिनाथ भगवान की चौरी :- दाहिनी ओर की यक्षिणी की देरी के घूमट का कार्य चालु है।

आदीश्वर भगवान के जिनालय के इर्दगिर्द के जिनालय शिखरों पर ३१ ध्वजदंड को सुवर्ण चढाने का कार्य चालु है। पालीताणा गांव स्थित जशकुंवर पेढी के जिनालय में नकाशी का कार्य एवं घडाई का कार्य चालु है।

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी को चाहिए

मेनेजर/सहायक मेनेजर :- वय ४० साल से ज्यादा

शिक्षण :- स्नातक

योग्यता :- धार्मिक या सामाजिक संस्था मे ५ साल से ज्यादा का अनुभव, सरकारी-गैरसरकारी संस्थाओ की कार्यवाही के जानकार कोम्प्युटर का अनुभव, धर्मशाला-भोजनशाला की समग्र व्यवस्था सम्हालने की क्षमता। जैन तीर्थ स्थानो में रहकर अपना कर्तव्य निभा सके वैसे निरीक्षक।

सुपरवाईजर/क्लार्क :- वय २५ साल से ज्यादा

शिक्षण :- स्नातक

योग्यता :- अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कोम्प्युटर टाईपींग, ऐकाउन्ट एवं कोम्प्युटर की जानकारी हो, जैन तीर्थ स्थानों में रहकर अपना कर्तव्य निभा सके।

पूजारी :- वय २२ से ज्यादा

जैन मंदिर मे पुजारी की कार्यवाही के अनुभवी, सेवापूजा, आंगी, भक्ति भावना की कार्यवाही के जानकार, दूसरे गांव मे रह सके वैसे।

उपर्युक्त सभी स्थान मे जैन धार्मिक सिद्धांतों एवं प्रणालिकाओ की जानकारी वालों को चयन में प्राथमिकता दी जाएगी

आवेदन करने वाले को अपना शिक्षण, अनुभव वगैरह की झेरोक्ष के साथ निम्न पते पर आवेदन करे.

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी (धार्मिक धर्मादा ट्रस्ट)
"श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन"
२५, वसंतकुंज, नवा शारदामंदिर रोड,
पालडी, अमदावाद - ३८० ००७

तीर्थ व्यवस्था, सलाह सूचन, दान-सहयोग, जीवदया, पांजरापोल, जीर्णोद्धार वगैरह प्रवृत्तियों के लिए पेढी के संपर्क सूत्र

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट
श्रेष्ठि लालभाई दलपतभाई भवन,
२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद-३८० ०२७
फोन : (०७९) २६६४४५०२, २६६४५४३०
समय : सुबह ११ से १-३० व् दोपहर २ से ३-३०
Telefax : 079-266082441 • Email : shree_sangh@yahoo.com

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट
पटनी की खड़की, झवेरीवाड, अहमदाबाद-३८० ००१
समय : सुबह ११ से १-३० व दोपहर २ से ३-३० तक
फोन : (०७९) २५३५६३१९

मुंबई ओफिस
शेठ आणंदजी कल्याणजी
१००१, १०वे माल, मेजीस्टीक सोपिंग सेन्टर, ११४, जे.एस.एस. रोड
गीरगाम चर्च के पास गीरगाव, मुंबई-४००००४.
(पैसा जमा करवाने का समय) सुबह ११.०० से १.३० दुपहर मे २.०० से ६.००

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट
श्री रजनीशांति मार्ग, पालीताणा-३६४ २७०
ओपेरा हाउस, मुम्बई-४०० ००४ ञ्दद्यद्द : ०२८४८-२५२१४८, २५३६५६
समय : सुबह ९ से १२.३० दोपहर २.३० से ७

और अंत में

आपको 'श्री आनंदकल्याण' का यह अंक अच्छा लगा ? क्या अच्छा लगा ? कुछ पसंद न भी आया हो तो वह भी हमें खुले मन से पर खुरदरी नहीं अपितु नरम कलम से लिख भेजें। हमें अवश्य अच्छा लगेगा। पत्रव्यवहार के लिए ई-मेईल माध्यम इच्छनीय एवं उपयुक्त रहेगा।

anandkalyanmagazine@gmail.com

॥ दया धर्म का मूल है ॥

शेठ आणंदजी कल्याणजी छा.पां.सा. ट्रस्ट

श्री छापरीयाली पांजरापोल

(स्थापना : वि.सं. १९०८ इस्वी. १८५२)

अनेक अबोल पशुओं का आश्रयस्थान

जीवदया प्रतिपालक योजना में रु. ९०००/-के वार्षिक अनुदान के साथ जुडिये एवं जीवों के पालक बने ।

प्रतिदिन केवल २५ रुपये जैसी मामूली राशि का योगदान देकर छापरीयाली पांजरापोल की दैनिक निभाव फंड योजना में लाभ लीजिए एवं रोजाना एक पशु को अपनी ओर से घास-चारा डालने का अमूल्य लाभ प्राप्त करें ।

जीवो के अभयदाता बनिये । दया तमाम धर्मों का मूल है ।
आज ही परिवार के प्रत्येक सदस्य या पूरे परिवार की
ओर सै रु. ९०००/- का पांजरापोल को दान कीजिए ।

इस संस्था को दिया गया दान इन्कमटेक्स - कानून के कलम (80G) अंतर्गत करमुक्त है ।

पांजरापोल की किसी भी योजना में लाभ लेने के लिए
आप चेक से राशि पेढीके पते पर भिजवा सकते है. या
STATE BANK OF INDA (जेसर शाखा) के सेविंग्स A/C 5602200l345
(IFS CODE - SBIN0060022)
जमा करवा कर बेंक स्लिप की नकल पेढी को
भिजवाने से रसीद आप को भेज दी जायेगी ।

शेठ आणंदजी कल्याणजी छा.पां.सा. ट्रस्ट

मु.पो. छापरीयाली, वाया : जेसर - ३६४५१०, जि. भावनगर

फोन: (०२८४४) २९०२४५/२९०२४६

अंक-४

श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति

श्री आदिनाथ दादा की ५००वीं सालगिरह

MISSION 500
SUVARNA MAHOTSAV CELEBRATION

संवत २०८७ वैशाख वद-६.
सोमवार दिनांक १२-०५-२०३१

BOOK - POST

To,

श्री आनंद कल्याण (त्रिमासिक पत्र)

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन, २५, वसंतकुंज,
नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद - ३८० ००७.
E-mail : anandkalyanmagazine@gmail.com